प्रेम-माधुरी

मारग प्रेम को को समुझे 'हरिचन्द' यथारथ होत यथा है।

लाभ कछू न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है।

जानत है जिय मेरौ भली बिधि और उपाइ सबै बिरथा है।

बावरे हैं ब्रज के सिगरे मोहिं नाहक पूछत कौन बिथा है ।। 1 ।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
    - ♦ पद्यांश का शीर्षक प्रेम माधुरी तथा कवि का नाम भारतीय हरिश्चंद्र है।
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
    - ♦ गोपी कहती है की प्रेम की संपूर्ण कहानी तो केवल कलंकित होने की ही है अतः इस विषय में पुकारने से भी कोई लाभ नहीं।
3. बदनाम होने की सारी कथा किसे कहा गया है?
    - ♦ प्रेम को बदनाम होने की सारी कथा कहा गया है।
4. पद्यांश में *बावरे* शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है
    - ♦ *बावरे* शब्द ब्रज के लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ है।
5. *सिगरे* तथा *यथारथ* शब्दों का अर्थ लिखिए।
    - ♦ *सिगरे* - सभी
    - ♦ *यथारथ* - यथार्थ, सत्य।
6. रस वियोग श्रृंगार छंद सवैया भाषा ब्रज अलंकार रूपक, यमक और अनुप्रास।

रोकहिं जो तौ अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइए ।

जौ कहैं जाहु न तौ प्रभुता जौ कछू न कहें तो सनेह नसाइए ।

जो 'हरिचन्द' कहें तुमरे बिनु जीहैं न तो यह क्यों पतिआइए।

तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमें समझाइए । 2 ।।

Cyancindhu Coaching Classes

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
    - ♦ उपर्युक्त
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
    - ♦ गोपी कहती है आप ही समझाइए कि आप के प्रस्थान के समय मैं आपसे क्या कहूं?
3. नायिका द्वारा जगत की किस रीति का वर्णन किया गया है?
    - ♦ जगत की यह रीत है की यात्रा हेतु प्रस्थान करने वाले व्यक्ति को रोकने टोकने से उसका अमंगल होता है।
4. पद्यांश में नायिका की किस मनोदशा का उल्लेख है ?
    - ♦ पद्यांश में नायिका की असमंजस एवं दुविधापूर्ण मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है। नायिका का पति परदेश जा रहा है और वह इस असमंजस की स्थिति में है कि किस प्रकार विदेश जाते हुए अपने पति को अपने मनोभावों से अवगत कराए।
5. उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?
    - ♦ अनुप्रास अलंकार।
6. *पतिआइए* तथा *पयान* शब्दों का अर्थ लिखिए।
    - ♦ *पतिआइए* - विश्वास
    - ♦ *पयान* - प्रस्थान
7. रस श्रृंगार छंद सवैया भाषा ब्रज अलंकार -अनुप्रास।

Gyansindhu Coaching Classes

आजु लौं जौ न मिले तौ कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं ।
मेरौ उराहनो है कछु नाहिं सबै फल आपने भाग को पावैं ।
जो 'हरिचंद' भई सो भई अब प्रान चले चहैं तासों सुनावैं।

प्यारे जू है जग की यह रीति बिदा की समै सब कंठ लगावैं | 3 ।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
    - ♦ उपर्युक्त
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
    - ♦ गोपियां श्री कृष्ण से कह रही हैं कि आप जीवन भर हम से नहीं मिले तो ना सही परंतु अब तो मैं आपसे सदैव के लिए दूर हो रही हूं। इसलिए अब तो आप मुझे एक बार अपने गले से लगा लीजिए।
3. इस पद्यांश में नायिका के किस दशा का चित्रण किया गया है?
    - ♦ अपने प्रियतम के प्रति असीम प्रेम प्रदर्शित हुआ है तथा नायिका की विरह दशा का वर्णन हुआ है।
4. रस श्रृंगार छंद सवैया भाषा ब्रज अलंकार अनुप्रास।

Gyansindhu Coaching Classes

व्यापक ब्रह्म सबै थल पूरन हैं हमहूँ पहचानती हैं।
पै बिना नँदलाल बिहाल सदा 'हरिचन्द' न ज्ञानहिं ठानती हैं।
तुम ऊधौ यहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं ।। 4 ।।

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए।
    - ♦ उपर्युक्त
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
    - ♦ गोपियां कहती हैं कि हम और कुछ नहीं जानती और हमारी यह दुखी आंखें श्री कृष्ण के दर्शनों के अतिरिक्त कुछ और स्वीकार नहीं करती।
3. इस पद्यांश में कवि ने ब्रह्म के किस स्वरूप को महत्ता दी है?
    - ♦ ब्रह्म के सर्वव्यापक स्वरूप को महत्ता दी है।
4. गोपियाँ उद्धव से क्या कहती हैं?

- गोपियां उद्धव से कहती हैं कि जाकर श्री कृष्ण से कह देना कि हम और कुछ नहीं जानती हैं बस हमारी आंखें श्री कृष्ण के दर्शनों के अतिरिक्त और कुछ स्वीकार नहीं कर रही हैं।

5. इस पद्यांश में कौन-सा रस है ?

- वियोग श्रृंगार

6. गोपियाँ व्यापक ब्रह्मा को किस रूप में मानती हैं ?

- सर्व व्यापक रूप में मानती है।

7. गोपियाँ सदैव किसके बिना 'बिहाल' रहती हैं ?

- श्री कृष्ण के बिना।

8. गोपियाँ भली प्रकार किसके विषय में जानती हैं?

- सर्व व्यापक ब्रह्म के विषय में।

9. सर्वव्यापक कौन हैं ?

- सर्व व्यापक ब्रह्म है।

10. किसको छोड़कर किसे ज्ञान चर्चा रुचिकर नहीं लगती ?

- श्री कृष्ण को छोड़कर गोपियों को ज्ञान चर्चा रुचिकर नहीं लगती

11. गोपियों की दुःखियां आँखें क्या स्वीकार नहीं करती ?

- गोपियों की दुखी आंखें श्री कृष्ण के दर्शन के बिना और कुछ स्वीकार नहीं करती।

12.रस श्रृंगार **छंद** सवैया **भाषा** ब्रज **अलंकार** रूपक, यमक और अनुप्रास।

Gyansindhu Coaching Classes